इतिहास विषय अध्यापन की पद्धतीयॉ

प्रा. राकेश अशोक रामराजे

सहाय्यक प्राध्यापक,

पी.व्ही.डी.टी. कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन फॉर वूमेन,

एस.एन.डी.टी. महिला विद्यापीठ, चर्चगेट, मुंबई – 20.

सारांश :

अध्यापन पद्धती विद्यार्थी को ज्ञान देने का एक तरीका है। यह भी कहा जाता है की जिस प्रकार किसी एक उददेश्य को पूर्ण करने के लिए अनेक मार्ग होते है, ठीक उसी प्रकार अध्यापन पद्धती भी अनेक प्रकार की होती है। हमें भी विविध अध्यापन पद्धतीयों में से एक या एक से जादा पद्धतीयों का चुनाव करते हुए विद्यार्थी के मनोविज्ञान, रुचि, मानसिक स्तरों तथा अन्य मानसिक तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए।

परंपरागत रुप से जग हम शिक्षण–पद्धतीयों के विषय में बातचीत करते है तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि शिक्षक क्या करता है। परंतु आधुनिक युग में शिक्षण पद्धतीयों के साथ जो पद प्रयुक्त किये जाते है, वे छात्रों की सीखने की क्रियाओं का वर्णन करते है।

मुख्य परिभाषा : इतिहास विषय, अध्यापन पध्दती

प्रास्ताविक :

प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली बहुत अलग थी। प्राचीन समय में गुरुकुल पद्धती द्वारा अध्यापन किया जाता था। जिसमें शिक्षक का विशेष महत्व था। शिक्षककेंद्री अध्यापन पद्धती में शिक्षक मुख्य रहता था। उस पद्धती में शिक्षक व्याख्यान द्वारा अध्यापन करते थे। समय के साथ परिस्थितीयों में बदलात आते गये और आज के अध्यापन पद्धती का मुख्य केंद्रबिंदू विद्यार्थी हो गया। विद्यार्थीयों को विषयज्ञान विस्तृत करने हेतू नये–नये अध्यापन पद्धतीयों का उपयोग होने लगा।

प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली बहुत अलग थी। प्राचीन समय में गुरुकुल पद्धती द्वारा अध्यापन किया जाता था। जिसमें शिक्षक का विशेष महत्व था। शिक्षककेंद्री अध्यापन पद्धती में शिक्षक मुख्य रहता था। उस पद्धती में शिक्षक व्याख्यान द्वारा अध्यापन करते थे। समय के साथ परिस्थितीयों में बदलात आते गये और आज के अध्यापन पद्धती का मुख्य केंद्रबिंदू विद्यार्थी हो गया। विद्यार्थीयों को विषयज्ञान विस्तृत करने हेतू नये–नये अध्यापन पद्धतीयों का उपयोग होने लगा।

अध्यापन पद्धती एक सामान्य योजना है। जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक परिणाम या उददेश्य को प्राप्ति के लिए किया जाता है। अतः शिक्षण पद्धती शैक्षिक उदद्श्यों से संबंधित है। दूसरें शब्दों मे कह सकते है कि शिक्षण पद्धतीयॉ एक मार्ग है। जिसके द्वारा शैक्षिक उददेश्यों को प्राप्ति के लिए कार्य किया जाता है।

'पी.सी.हेल' के अनुसार इतिहास या अध्यापन पद्धतीयों का सामान्यीकरण अवास्तविक है। इसके अतिरिक्त इतिहास शिक्षण की कोई एक अध्यापन पद्धती नहीं है। अधिगम के कई उज्वल मार्ग है।

इतिहास के शिक्षण से पूर्व, अध्यापक के पास शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्राप्ति हेतु कुछ उददेश्य होते है। इन उददेश्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक द्वारा विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जाता है।

अच्छे अध्यापन पद्धती की विशेषता

इसे विद्यार्थी के मन में विविध रुचियों को उत्पन्न करना चाहिए। विद्यार्थीयों में मूल्य, उचित दृष्टिकोन पूर्वक कार्य की आदतों का विकास करना चाहिए। मौखिकता तथा स्मरण की जगह उददेष्यपूर्ण मुर्त तथा वास्तविक स्थितियों द्वारा अधिगम पर बल देना चाहिए। विद्यार्थी की सक्रियता तथा भागीदारी के पर्याप्त क्षेत्र होना चाहिए। अध्ययन के लिए इच्छा को प्रेरित करना चाहिए। विभिन्न स्तरों पर बुद्धि के अनुसार ही चुनना चाहिए।

कथात्मक पद्धती –

कथात्मक पद्धती में कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि का समावेश होता है। कल्पना की उडान में उनकी बहुत सी नैसर्गिक प्रवृत्तीयों का विकास होता है। इतिहास के शिक्षकों को इस कला का जानना आवष्यक है। यदि उसमें यह कला स्वाभाविक रुप से नहीं है तो उसे प्रयत्न करके अर्जित करना चाहिए। यदि यह ऐसा नहीं करेगा तो वह सफल शिक्षक नहीं हो सकता तथा अपने छात्रों के साथ पूर्ण न्याय नहीं करेगा तो इस पद्धती की सफलता शिक्षक के गुणों पर निर्भर है। कहानी सुनाते हुए अध्यापक को उस काल के समाज के आर्थिक तथा राजनीतिक ढॉचे के प्रति पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। कहानह श्रृंखला बद्ध रुप सें सुनाना आवश्यक है। अध्यापन किसी भी उस स्त्रोत का प्रयोग कर सकता है जो उस कहानी से जुडा हो। उदा. गुफाओं का चित्र, मानचित्र आदि।

कहानी के प्रकार

कहानी बच्चो की जिज्ञासा को शांत करती है। उनको शिक्षा प्रदान करने के लिए अनेक प्रकार की कहानियॉ होती है।

कल्पित कथा

जो कथा परियों तथा अन्य चीजों से कल्पना के तौर से बनी हुयी रहती है उन्हे कल्पित कथा कहते है। यह कथा सत्य नहीं होती। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इनका मूल्य थोडा हीं है।

दंत कथा

से कथा जिसमे सत्य का कुछ अंश होता है। उनका विवरण व्यापक व जादा सत्य न होने के कारण उन्हें दंत कथा कहा जाता है। इस प्रकार की कहानी प्राथमिक स्तर के लिए उपयुक्त होती है।

सत्य कथा

जिन कहानियों का संबंध सत्य से हो, उन्हें सत्य कथा कहा जाता है।

ऐतिहासिक कहानी चाहे दंत कथा हो उन्हें सत्यता के आधार पर बनाना चाहिए।

व्याख्यान पद्धती

इतिहास अध्यापन की प्राचीन पद्धतीओं में से यह एक पद्धती है। इस पद्धती में शिक्षक विद्यार्थीयों को मार्गदर्शन करता है। यह पद्धती शिक्षक केंद्रित अध्यापन पद्धती है। शिक्षक विद्यार्थीयों को आकर्षित करने हेतू प्रश्न पुछते है। इस पद्धती का उपयोग विषय का आरंभ करने से पहले अध्यापक

कभी कभी विशिष्ट पक्षों को व्याख्यान द्वारा कुशलतापूर्वक प्रस्तुत कर सकता है। वह कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों, घटनाओं तथा समस्याओं की ओर ध्यान केंद्रित करता है। इस तरह विद्यार्थी को प्रेरित करता है। किसी भी विषय को स्पष्ट रुप से समझाने के लिए इस पद्धतीका उपयोग होता है। व्याख्यान पद्धती द्वारा अध्यापक विषय और पाठ का सारांश सहीं तरीकें से समझा सकता है। इस पद्धती द्वारा विषय सामग्री को स्पष्ट रुप से विस्तार पूर्वक समझाया जा सकता है। जिससे विद्यार्थीयों को किसी भी मुददो के बारें में कोई संदेह नहीं रहता है और अध्यापक इसमें अपने अनुभवों का विस्तार कर सकता है।

चर्चा पद्धती

वर्तमान युग चर्चा का युग है। हम पूर्ण विचार चर्चा के पश्चात निष्कर्षो तथा निर्णयों पर आते है। यह टिप्पणी एक राजनीतिक स्तर पर चर्चाओं के लिए लागू हो सकती है। यह शिक्षा पर भी समान रुप सं लागू होता है। चर्चा इतिहास शिक्षण पद्धतीयों में सें एक मूल्यवान पद्धती है। नए कार्य के लिए योजना बनाना, भविष्यवर्ती क्रिया से संबंधित निर्णय के लिए सूचना देना, विचारों को स्पष्ट करना, रुचियों को प्रेरित करना व प्रगति के मूल्यांकन के लिए यह पद्धती उपयुक्त है। चर्चा पद्धती द्वारा पाठयमुददों को स्पष्ट किया जाता है। चर्चा विद्यार्थी को उन्हें जो ज्ञात नहीं व ज्ञान खोजनें में सहायता करता है। चर्चा विचारों के प्रति सहनशीलता प्रदान करता है। यह पद्धती सभी विषयों के लिए उपयुक्त नहीं है। यह प्राथमिक स्तर पर उपयुक्त नहीं है।

आधार पद्धती

इतिहास अध्यापन पद्धतीयों में ये पद्धती अत्यंत महत्वपूर्ण है। अध्यापन करते समय विभिन्न आधार लेते हुए विद्यार्थीयोंको मार्गदर्शन करना ऐसा अपेक्षित है। आधार पद्धती का प्रयोग उच्च प्राथमिक व माध्यमिक स्तर अधिक रुप में किया जाता है। इस में जो स्त्रोतों का प्रयोग किया जाता है उसके आधार पर कक्षा में सजीवता की भावना प्रदान होती है। यह वस्तूस्थिती की भावना निर्माण करती है। यह एक प्रेरणाप्रद वातावरण प्रदान करती है। आधार यह इतिहास के भूतकाल के लोंगों द्वारा छोडे हुए शेषचिन्ह है । ये शेषचिन्हों को सुविधाजनक निम्न भागों में बॉटा जा सकता है।

पुरातत्वीय स्त्रोत

इनमें स्मारक, मूर्तीया, बर्तन ऐसे चिजों का समावेश होता है। उसी प्रकार पुरालेख संबंधी के स्त्रोत, मुद्रा विषयक स्त्रोत भी शामील है।

साहित्यिक स्त्रोत

धार्मिक साहित्य, लौकिक साहित्य, निजी साहित्य, सार्वजनिक साहित्य, विदेशी साहित्य का प्रमाण ऐसे साधनोंका समावेश इसमें होता है।

मौखिक स्त्रोत

मौखिक परंपराऐं इनमें समावेशित है।

प्रकल्प पद्धती

प्रकल्प यह एक योजना है। इस प्रकल्प द्वारा जो कुछ समस्या है उन्हे योग्य रुप में सुलझाने हेतु किया हुआ संशोधन प्रकल्प पद्धती कहलाती है। इस पद्धती में विद्यार्थीयोंसे जुडी हुए समस्या लेकर उन्हे कुछ काम दिया जाता है और बाद में उन्होंने जो जानकारी हासील की उसके अनुसार मार्गदर्शन किया

जाता है। प्रकल्प पद्धती का उगम अमरिका के जॉन डयुई को माना जाता है पर किलपॅट्रीक उन्होनें उसमें बदलाव करते हुए उसे विकसित किया इसिलिए उन्हे प्रकल्प पद्धीका जनक माना जाता है। इस पद्धती में कौनसा प्रकल्प लेना वह निश्चित किया जाता है। उसे पूरा करने के लिए आवश्यक साधनों के अनुसार कार्यकाल निश्चित किया जाता है। योजना के अनूसार प्रत्यक्ष कार्य किया जाता है। अंत में जो कार्य किया उसका मूल्यमापन किया जाता है। इस पद्धतीसे अध्यापन करने से विद्यार्थी कृतीयुक्त अध्ययन करते है। यह पद्धती विद्यार्थी केंद्रित अध्यापन पद्धती है।

नाटकीय पद्धती

इतिहास विषय का अध्यापन करने के लिए व विद्यार्थी अभिरुची निर्माण करणे हेतू यह महत्वपूर्ण अध्यापन पद्धती है। इतिहास में घटीत हुई घटनाओं पर विद्यार्थी द्वारा नाटकीय रुप में दर्शाना यहापर अपेक्षित है। अभ्यासक्रम में कुछ पाठयांश के लिए यह उपयुक्त पद्धती है। नाटकीय पद्धतीद्वारा पाठयांश में पाठयघटकोंका प्रस्तुतीकरण द्वारा होणे वाला ज्ञान अधिक समय तक याद रहता है। इस पद्धतीद्वारा छात्रों को वास्तविकता समझ आती है। छात्रों का व्यक्तिविकास होणे में बढावा मिलता है। छात्रों के कल्पना का विकास होता है। विद्यार्थीयोंकी मदद भावना दृढ होती है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. दुनाखे, आर. (2000), इतिहासाचे अध्यापन. पुणे : देशमुख प्रकाशन.
2. घाटे, वि. द. (1985), इतिहासाचे अध्यापन. पुणे : नूतन प्रकाशन.
3. जोशी, अ. (1999). आशययुक्त अध्यापन. नाशिक : यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विदयापीठ.
4. कदम, चा. प. व चौधरी, बा. आ. (1992), शैक्षणिक मूल्यमापन. पुणे : नूतन प्रकाशन.
5. खाडे, सो. गो. (2004). शिक्षण संक्रमण. पुणे : महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडळ.
6. करंदीकर, एस्. व मंगरुळकर, एम्. (2008), इतिहास आशय अध्यापन पद्धती. कोल्हापूर : फडके प्रकाशन.